यै: शान्त-राज-रुचिभि: परमाणुभिस्-त्वं,
निर्मापितस्- त्रि-भुवनैक - ललाट-भूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणव: पृथिव्यां,
यत्ते समान- मपरं न हि रूप-अस्ति॥ 12॥

---

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारं,
रम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - अनल्पकान्ति,
विद्योतयज्-जगदअपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम्॥ 18॥

---

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारिजात-
सन्तानपादि - कुसुमोत्कर - वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद - बिन्दु- शुभ - मन्द - मरुत्प्रपाता,
दिव्य दिव: पतित ते वचसां ततिर्वा॥ 33॥

---

रक्तेक्षणं समत - कोकिल - कण्ठ-नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन - मुत्फन - मापतन्तम्।
आक्रामणि क्रम - युगेण निरस्त - शङ्कस्-
त्वन्नाम- नागदमनी हृदि यस्य पुंस:॥ 41॥

---

मन्ये वरं हरि- हरादयी एत दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता युवि येन नान्य:,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि॥ 21॥

---

आस्तां तवन मन- मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्सङ्कथाऽनि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरण: कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ 9॥